

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संस्कृत के विकास में भारत सरकार का योगदान

1958 → संस्कृत आयोग → सुमित्रा कुमार चटर्जी
V. शंदावण → विश्वबंधु शास्त्री (अध्यक्ष) के सदस्य

1960 → संस्कृत पढ़ाने के दो तरीके → आधुनिक
वैदिक पद्धति परंपरागत
1835 → संस्कृत को विषय के रूप में आधुनिक
तरीके से पढ़ाना शुरू किया गया।

1961 → तिरुपति में पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा
विश्व की पहली संस्कृत विश्वविद्यालय की
स्थापना।

1965 → लाल बहादुर शास्त्री द्वारा दिल्ली में
संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना।

1969 → 'संस्कृत दिवस' को मनाना प्रारंभ किया
गया (प्रत्येक वर्ष श्रावणी पूर्णिमा के दिन)।

क्योंकि संस्कृत के विद्वानों ने अर्थात् स्थापना के दिन
इंदिरा गांधी द्वारा दिल्ली में राष्ट्रीय मा.
1970 → संस्कृत संस्थान की स्थापना।

उज्जैन में राजीव गांधी द्वारा
1987 → 'महर्षि सान्ख्यिकी वेद विद्या प्रतिष्ठान' की
संदीपनी स्थापना।

1994 → संस्कृत में रेडियो संचार का आरंभ
नरसिंहराव

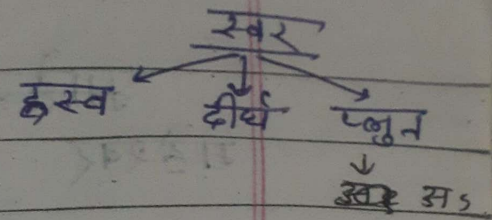
2016 → 'वार्तावलि' नामक कार्यक्रम (संस्कृत भाषा
में) का प्रस्तुतीकरण, D.D channel पर।

वेद का दूसरा नाम — श्रुति

सर्वप्राचीन पुस्तक — ऋग्वेद

सर्वप्रथम 'संस्कृत' शब्द का भाषा के रूप में प्रयोग ईसा
द्वारा 500 ईसा में किया गया।

वर्णों का उच्चारण स्थान



1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः

अ, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ष, स → कण्ठ

2. इचुयशानां तालुः

इ, च, छ, ज, झ, ञ, श, ष, स → तालु

3. ऋदुरषाणां मूर्धाः

ऋ, ए, ओ, ऌ, ॡ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ → मूर्धा

4. लृतुलसानां दन्ताः

लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स → दन्त

5. उपुउपध्मानीयानां ओष्ठः

उ, प, फ, ब, भ, म, ण, ष, स → ओष्ठ (होठ)

6. अ म ङ ण नानां नासिका च → नासिका (नीक)

7. एदैतोः कण्ठ-तालु → ए ऐ → कण्ठ-तालु

8. ओदैतोः कण्ठोष्ठम् कण्ठोष्ठम् → ओ औ → कण्ठ-ओष्ठ

9. वकारस्य दन्तोष्ठम् → व → दन्त-ओष्ठ

10. नासिका अनुस्वारस्य → अनुस्वार (ं)

व्याकरण के त्रिमुनि — चाणिकी, कात्यायन, पतंजलि

पाणिनि
↓
अष्टाध्यायी

वार्तिक

महाभाष्य

(3995)
4000 सूत्र

(इकोयणचि, -)

स्वयं राजन्ते इति स्वराः

→ अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ

Pratyahar .

महेश्वर सूत्र / प्रत्याहार सूत्र → 14 .

महेश्वर

अ इ उ ण | ऋ लृ क | ए ओ ङ | ऐ औ च |
 ह य व र ह | म ङ ण न म |
 इ म म | ष ढ ध व | ज ब ग ड द श |
 श फ ढ ठ थ च ट न व | क प य |
 श ष स र | ह ल |

① अणु , अक , अच → स्वर , हल → व्यंजन .
 अ, इ, उ (अ इ उ ऋ लृ) उदात्त - तालु के ऊपर से
 अनुदात्त - तालु के नीचे से
 स्वरित - दोनों जगहों से
 ह → कंठ
 → कण्ठ (कूट) ~~(कूट)~~

वेद में तीन प्रकार के स्वर होते हैं - उदात्त, अनुदात्त, स्वरित.
 ऋषि / आम्नाथ / छान्दस / मिगम

विदु → ज्ञान, लाभ, सत्ता, विचार
 UDAATT
 ANUDATT
 SWARIT

प्राची (पूर्व) → East.

प्राच्य

प्राच्यविद्या - Lord Bernal - 1812.

प्राच्यवाद

1978 → Edward S. Sars → orientalism (प्राच्यवाद)

प्राच्यवाद → पूर्व के देशों के लिए पश्चिमी देशों द्वारा किया गया पूर्वाग्रह अर्थात् एक ऐसी मानसिकता जो पूर्व के देशों को असभ्य, और हीन बनाती है।
स्वशासन के लिए अयोग्य

Mid Sem.

Prachyaवाद

उच्चारण स्थान

प्राच्यवाद → लघु उत्तरीय

वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय.

4 वेद — 4: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद.

मीमांसा, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्

वेदांग — शिक्षा, कल्प, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द,

(6) व्याकरण

वैदिक साहित्य को श्रुति कहा जाता है, क्योंकि यह अर्जुन काल से ऋषियों एवं ऋषिकाओं ने इसे ~~सुनिश्चित~~ इस साहित्य को श्रवण परंपरा द्वारा ग्रहण किया गया आगे की पीढ़ियों में भी यह श्रवण द्वारा ही स्थानांतरित किया गया।

अ इ उ ण् । ऋ ॠ क् । ए ओ ऋऌ ऐ औ ऋऌ ।
अ व ग ङ उ द श । ल ण् ।

~~अ क ख ग घ ङ~~ ~~अ र ल व~~

अ क ख ग घ ङ य च ट त व ।

ह य व र ण् । ल ण् । अ म ङ ण न म् । अ म अ

पूर्व में उत्पन्न - प्राच्यवाद

प्राच्यवाद

यह एक विचारधारा है जिसके अंतर्गत पश्चिम द्वारा स्वयं को केन्द्र में रखकर अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए पूर्वी संस्कृतियों के लिए स्थावर संरचना बनायी गयी थी। (18वीं & 19वीं सदी)

एडवर्ड साईद के अनुसार प्राच्यविदों द्वारा यूरोप के पूर्व प्रांतों का प्रयोग एशिया और मध्य-पूर्व की भाँत और रोमनी धर्मियाँ गढ़ी गई, ताकि पश्चिम के औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को तर्क मिल सके।

Lord Bogan - 1812 first use of 'Oriental Studies' (प्राच्य अध्ययन)

Edward Said - 1978 → 'Orientalism' book

→ ~~Literature~~ Professor of comparative literature at Columbia University. → तुलनात्मक साहित्य

तथ्यों एवं अर्थ पर आधारित ना होकर पूर्व-निर्धारित रुढ़ियों पर आधारित है।

यूरोपीय कलाकारों द्वारा पूर्व का चित्रण - तर्कबुद्धि से वंचित, श्रैण, दुर्बल

पश्चिमी देशों का चित्रण - विद्वत्संगत, बलवान, ज्ञानपूर्ण

यह दुराग्रह पश्चिमी विद्वानों में इतना रूढ़ बन गया है, कि पश्चिमी प्रेक्षक इसे देख नहीं पाते हैं, साम्राज्यवादी प्रभुत्व के कारण बहुत से ~~Exhaust~~ ~~exhaust~~ → मरणावधि विचारधारा

पूर्वी विद्वानों ने भी इसे आत्मसात कर लिया है।

इस प्रक्रिया में पश्चिम सभ्यता का मानक बन गया है और प्राच्य असंगत हो गया है। इस प्रकार occident (पश्चिम) ~~orient~~ (पूर्व) को विपरीत ध्रुव की तरह रचा है।

प्रान्छविद्या - संस्कृति, कला, साहित्य, समाज और भाषा का वैज्ञानिक वैज्ञानिक अध्ययन जिस अनुशासन में किया जाता है, इसे प्रान्छविद्या कहते हैं।
(आधुनिक अर्थ में)

दुर्बल, अयथ, शासन के लिए अयोग्य, अंग

भारत में विद्या परंपरा का विस्तार

विद्यार्थ - त्रयी, चतुष्टयी, अष्टादश

छान्दोग्य उपनिषद् → नारद सनत्कुमार के पास जाते हैं और 19 विद्याओं का नामोल्लेख करते हैं।

शुक्नीति - 32 विद्यार्थ, 64 कलाएँ।

जो व्यापारी पश्चिम और भूशेष की साम्राज्यवादी नीति के तहत चले आए, उन्हें व्यापार के लिए पूर्व के देशों की समझने की जरूरत थी। चाहे ईरान हो, ईराक हो, अफ़ग़ानिस्तान दक्षिण-पूर्व एशिया के देश हों या भारत हो।

एडवर्ड साईड ने 1978 में प्रकाशित पुस्तक में प्रान्छवाद शब्द के अर्थ को नया संदर्भ दिया।

साईड ने अरब और इस्लामी सभ्यता के संदर्भ में प्रान्छवाद का विश्लेषण करते हुए साम्राज्यवाद से प्रान्छवाद के बाहरे संबंध और उसके राजनीतिक निहितार्थ को रेखांकित किया।

मिशेल फ़ूको की सत्ता और ज्ञान के अंतर्संबंधों के साथ-साथ

छोटी-छोटी ग्रामीण की वर्चस्व की अवधारणा ने भी

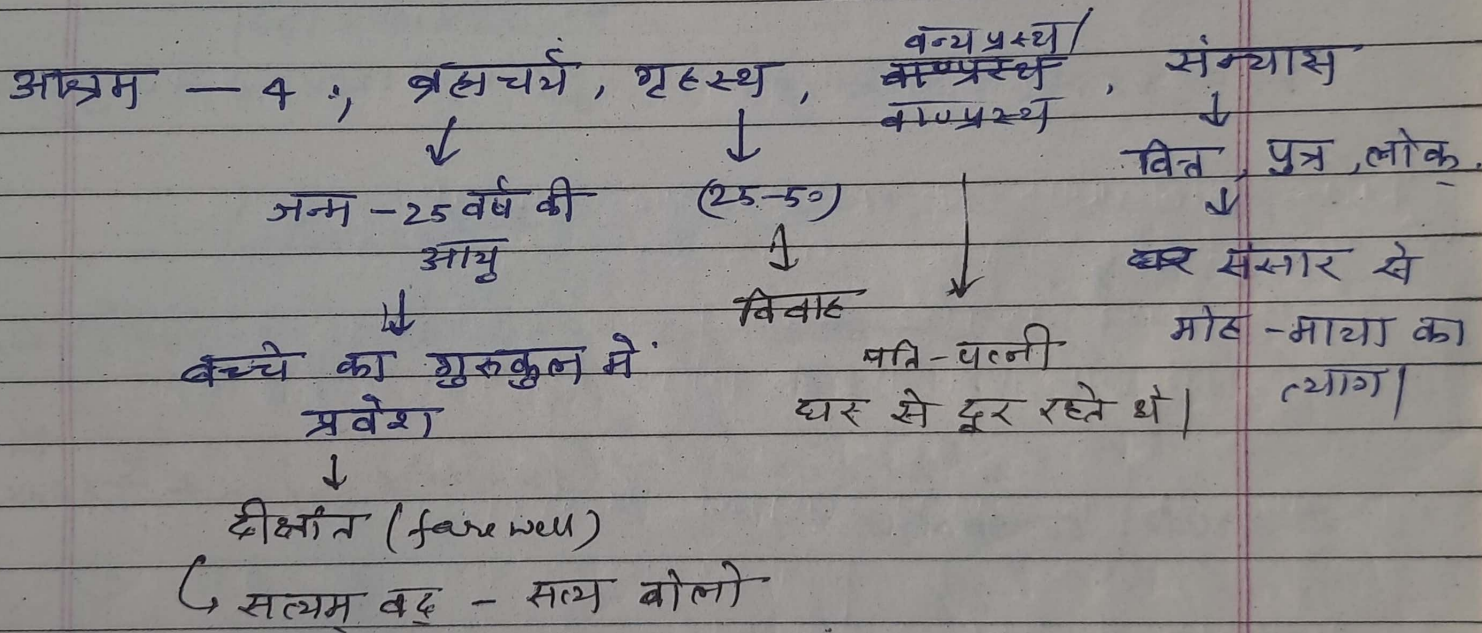
• प्रान्छवाद के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय

वैदिक साहित्य	वैदिक साहित्य	वैदिक साहित्य
वेदांग	वेद शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई है।	
संहिता - 4		
ब्राह्मण		
आरण्य	सामवेद - संगीत का मूल	
उपनिषद् -	यजुष -	

1. वेद को वेदत्रयी क्यों है।
 → वेद में तीन प्रकार के मंत्र पाये जाते हैं।
 → यजुष
 → साम
 → यजुष

ब्राह्मण - जो मंत्रों की व्याख्या करने वाले ग्रंथ।
 प्रत्येक वेद का अपना अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ है।



उपनिषद् → गुरु के समीप बैठना एवं ज्ञान की बात
 नजदीक (10-108)

शंकराचार्य ने 10 उपनिषदों में अपना भाष्य लिखा।

उपनिषद् → दार्शनिक
 → नैतिक मूल्य

Next class - Architecture

Discharge =

निरुक्त वेदांग - ~~आख~~
आख

HTO → Experiment

Assign - वैदिक साहित्य का सामान्य
परिचय (3-4 pages)

वेदांग - 6 (षडंग) → जिनकी सहायता से वेदों का अर्थ जाना जाता है।

1. शिक्षा - How to pronounce, उच्चारण - स्थान, स्वर, मात्रा

↳ ध्वनि विज्ञान

↳ वर्णों के उच्चारण किस प्रकार होगा, कैसे होगा...

2. कल्प → श्रौतसूत्र → कर्मकांड, अथर्वश्रौत → अथर्ववेद

→ गृहसूत्र → 16 संस्कारों का वर्णन विधिवत् रूप से।

→ शुक्लसूत्र → अथर्वश्रौत की वेदी का निर्माण कैसे होगा।

→ धर्मसूत्र → धर्म्य नु संन्यस्य
सामाजिक नियम एवं बंधन

3. निरुक्त → मंत्रों के अर्थ, वैदिक शब्दकोष की व्याख्या

4. ज्योतिष → काल गणना

5. छन्द (लय) → ताल-लय; मंत्रों एवं श्लोकों की।

6. व्याकरण - शब्दों का विश्लेषण एवं उत्पत्ति।